इकाई 4 सबाल्टर्न (उपाश्रित) विमर्श*

इकाई की रूपरेखा

4.0 उद्देश्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 उपाश्रितः अवधारणा

4.2.1 रणजीत गुहा और सबाल्टर्न स्टडीज

4.2.2 डेविड हार्डमैन का देवी आंदोलन का अध्ययन

4.2.3 उपाश्रित के रूप में दलितः बी.आर. अम्बेडकर

4.3 सारांश

4.4 संदर्भ

4.5 बोध प्रश्नों के उत्तर

4.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के माध्यम से, आप निम्न कार्य कर सकेंगेः

- भारत में उपाश्रित के विचार पर चर्चा करेंगें;
- उपाश्रित दृष्टिकोण को स्पष्ट रूप से, औपनिवेशिक उप-लेखन और जाति पर अंबेडकर के विचारों और उनके जाति-विरोधी आंदोलन के बारे में बता पाएंगे; और
- उपाश्रित अध्ययन पर रणजीत गुहा और हार्डिमन के काम का मूल्यांकन कर सकेंगे।

4.1 प्रस्तावना

पिछली इकाइयों में राष्ट्रवादी विमर्श पाठ में भारत को समझने और इसके प्रमुख विमर्शों पर हमने चर्चा की है, पिछली इकाइयों में हमने भारतीय समाज पर अलग-अलग दृष्टिकोण पर चर्चा की है। जैसे हमने समझाया –

1) **इंडोलॉजिकल डिस्कोर्स**: भारतीय समाज का अपने शास्त्रीय ग्रंथों और साहित्य के माध्यम से अध्ययन।

2) **औपनिवेशिक प्रवचन**: ब्रिटिश उपनिवेशवादियों (मिशनरियों और प्रशासकों) द्वारा भारतीय समाज का अध्ययन विभिन्न विद्वानों द्वारा दिए गए राष्ट्रवादी आंदोलन पर अलग-अलग दृष्टिकोण।

वर्तमान इकाई, सबाल्टर्नयानि उपाश्रित दृष्टिकोण पर चर्चा करेगी और भारत के समाजशास्त्र का आलोचनात्मक आकलन करेगी और इतिहास के प्रमुख लेखन में सीमान्तों की आवाज़ (किसानों / आदिवासियों / अनुसूचित जातियों) की अनुपस्थिति का आकलन करेगी। प्रारंभ में हम उपाश्रित की अवधारणा पर चर्चा करेंगे, जिसे इतालवी विद्वान एंटोनियो ग्राम्स्की द्वारा गढ़ा गया है। यह शब्द औपनिवेशिक अध्ययन के विकास के साथ बहुत अधिक लोकप्रिय हो गया, खासकर जब इतिहास का एक नया चलन दक्षिण एशिया में किसानों के विद्रोह और आदिवासी विद्रोह के इतिहास को लिखने में शुरू हुआ। विद्वानों के एक समूह ने एक

*प्रफुल कुमार नाथ

नया चलन शुरू किया, जैसे कि रणजीत गुहा, डेविड हार्डमैन, पार्थ चटर्जी, शाहिद अमीन, ज्ञानेंद्रपांडे, डेविड अर्नोल्ड, सुमित सरकार, दिपेश चक्रवर्ती और अन्य। इन कुछ विद्वानों के साथ-साथ अम्बेडकर की भूमिका की भी चर्चा की जाएगी क्योंकि उन्होंने भारत में दलितों की मुक्ति, उत्थान और मुक्ति के लिए काम किया।

4.2 उपाश्रित : अवधारणा

एंटोनियो ग्राम्स्की द्वारा 'सबाल्टर्न' शब्द गढ़ा गया था। शुरू में इसका व्यापक रूप से सेना में निम्न अंडर रैंक को निरूपित करने के लिए इस्तेमाल किया गया था, लेकिन आजकल, सबअलटर्न (उपाश्रित) शब्द का अर्थ है कि उसके विभिन्न गुणों जैसे कि आर्थिक स्थिति, जाति, जातीयता, लिंग, जाति, यौन उन्मुखता से अंडर (निम्न) श्रेणी के लोग हैं और वे लोग इस तरह से हाशिए पर हैं। इस प्रकार सबाल्टर्न परिप्रेक्ष्य समाज को नीचे से समझने का तरीका है। एक स्तरीकृत समाज में विभिन्न कारणों से हाशिए पर रहे लोग ज्ञान का उत्पादन करते हैं और उनकी खुद की राजनीति होती है। हालांकि इतिहास और अध्ययन का प्रमुख इतिहासलेखन या लेखन उन्हें अपनी चिंताओं से बाहर रखता है। सबाल्टर्न परिप्रेक्ष्य उन लोगों में दिखता है जो उपेक्षित और हाशिए पर हैं और कुलीन परिप्रेक्ष्य के साथ इसके विपरीत हैं।

इतालवी नव-मार्क्सवादी एंटोनियो ग्राम्स्की ने हाशिए के लोगों को संकेतित करने के लिए अपनी जेल नोटबुक में सबाल्टर्न की अवधारणा शुरू की। सामान्य तौर पर, सबाल्टर्न का तात्पर्य ऐसे लोगों से है जो अवर श्रेणी के हैं, लेकिन, ग्राम्स्की अपने सामान्य अर्थ की तुलना में बहुत व्यापक अर्थों में इस शब्द का उपयोग करते हैं। सबाल्टर्न के अनुसार, उनका मतलब सभी प्रकार के गैर-विषम लोगों से था, जो एक वर्ग विभाजित समाज में शक्तिशाली और उच्च वर्ग की स्थिति प्राप्त नहीं करपाते थे। जैसे, उपाश्रित का तात्पर्य ऐसे समूह या व्यक्तियों से है जो सत्ता संरचना से बाहर हैं। उन्हें प्रमुख सत्ता संरचनाओं द्वारा उपाश्रित या अधीन बनाया जाता है और वे प्रमुख शक्ति संबंधों के तहत पीड़ित होते हैं।

उपाश्रित शब्द लोकप्रिय शैक्षिक बहस में तब आया जब विद्वानों के एक समूह ने आदिवासी आंदोलन और औपनिवेशिक भारत के किसान आंदोलन और विद्रोहियों पर सबाल्टर्न स्टडीज़ शीर्षक के तहत निबंध और संस्करणों की श्रृंखला शुरू की। यह स्पष्ट है कि मुख्यधारा के राष्ट्रवादी आंदोलन के अलावा औपनिवेशिक सत्ता को भारत में विभिन्न जनजातीय विद्रोह और किसानों के विद्रोह का सामना करना पड़ा। इस तरह के प्रतिरोध और आंदोलनों को मुख्यधारा के इतिहासलेखन या इतिहास लेखन के अध्ययन द्वारा नजर अंदाज कर दिया गया था।

बॉक्स 4.0 : एंटोनियो ग्राम्स्की

एंटोनियो ग्राम्स्की एक इतालवी नव-मार्क्सवादी थे जिन्होंने मार्क्सवाद को फिर से परिभाषित किया, विशेष रूप से आर्थिक नियतिवाद जैसे पारंपरिक मार्क्सवाद के विचारों के माध्यम से। इटली के ट्यूरिन में अपने उच्च अध्ययन के दौरान, वह इतालवी कम्युनिस्ट पार्टी के कुछ सदस्यों के संपर्क में आए। ग्राम्सी इतालवी सोशलिस्ट के सक्रिय सदस्य बन गए और अपने पत्रकारिता कैरियर की शुरुआत की। उन्होंने मार्क्सवाद, क्रांति, पेरिस कम्यून, फ्रांसीसी और इतालवी क्रांति पर श्रमिक हलकों में नियमित रूप से बोलना शुरू किया। 1919 में उन्होंने समय-समय पर "द न्यू ऑर्डरः ए वीकली रिव्यू ऑफ सोशलिस्ट कल्चर" शुरू किया, जो वामपंथी कट्टरपंथी और क्रांतिकारियों के बीच लोकप्रिय हो गया। अगले कुछ वर्षों के लिए, ग्राम्स्की ने

अपना अधिकांश समय फैक्ट्री काउंसिल आंदोलन के विकास और उग्रवादी पत्रकारिता के लिए समर्पित किया। 8 नवंबर, 1926 को, उन्हें रोम में गिरफ्तार किया गया था और फासीवादी प्रभुत्व वाली इतालवी सरकार द्वारा लागू की गई "असाधारण कानूनों" की एक श्रृंखला के अनुसार एकांत जेल में डाला गया था । जेल में रहने के दौरान उनकी प्रिज़न नोटबुक उनके द्वारा लिखी गई थी। 27 अप्रैल, 1937 को उनका निधन हो गया।

स्रोतः (https://www.marxists.org/archive/gramsci/intro.html

सबाल्टर्न स्टडी ग्रुप से जुड़े विद्वानों का मानना है कि सबाल्टर्न वर्गों के आदिवासी और किसानों द्वारा औपनिवेशिक काल में किए गए योगदान इतिहास में अनजाने ही रह गए हैं। भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन का अध्ययन विद्वानों के प्रमुख वर्ग द्वारा किया गया था। भारतीय राष्ट्रवाद के इतिहास को लिखने में उन्होंने केवल कुलीनों के योगदान को स्वीकार किया। इस प्रकार, सबाल्टर्न हिस्टोरियोग्राफी उन ऐतिहासिक आख्यानों को पुनर्स्थापित करने और लोगों की राजनीति और इतिहासकारों द्वारा नजरअंदाज किए गए इतिहास को पुनर्निर्मित करने का एक प्रयास था। सबाल्टर्न परिप्रेक्ष्य में कहा गया है कि आदिवासी और किसान इतिहास की वस्तु नहीं हैं, बल्कि वे अपना इतिहास बनाते हैं। बी.आर. अम्बेडकर, रणजीत गुहा, डेविड हार्डमैन और अन्य सबाल्टर्न परिप्रेक्ष्य के प्रमुख पैरोकार हैं। अंबेडकर न केवल स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े थे, बल्कि दलितों के प्रति जाति आधारित अत्याचारों के खिलाफ व्यापक रूप से विरोध करते थे। रणजीत गुहा और डेविड हार्डमैन औपनिवेशिक भारत के विभिन्न आदिवासी और किसान विद्रोहियों को बहाल करने में लगे हुए हैं, जिन्हें प्रमुख इतिहास लेखन प्रथाओं द्वारा अनदेखा किया गया था।

बोध प्रश्न 1

नोट : क) अपने उत्तरों के लिए नीचे दी गई जगह का उपयोग करें।

ख) इकाई के अंत में दिए गए उत्तर के साथ अपने उत्तरों की जांच करें।

1) उपाश्रित (सबाल्टर्न) परिप्रेक्ष्य क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

2) कौन से प्रमुख भारतीय विद्वान थे जिन्होंने उपाश्रित परिप्रेक्ष्य का अध्ययन किया?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

4.2.1 रणजीत गुहा और सबाल्टर्न स्टडीज

सबअलटर्न अध्ययन जो भारत में एक उपनिवेशवादी सिद्धांत के रूप में उभरा, लोगों के इतिहास को पुनः लिखने के बारे में है। इस परियोजना को ज्यादातर रणजीत गुहा और उनके सहयोगियों जैसे पार्थ चटर्जी, डेविड हार्डमैन, शाहिद अमीन, ज्ञानेंद्र पांडे, डेविड अर्नोल्ड, सुमित सरकार और दिपेश चक्रवर्ती द्वारा श्रेय दिया जाता है। सबाल्टर्न हिस्टोरियोग्राफी यानी इतिहास के अध्ययन के तरीकों का संबंध "सबाल्टर्न लोगों के इतिहास" से है। सबाल्टर्न इतिहास का मूल आधार नीचे से इतिहास या इतिहास के अभिजात्य वर्ग के विरोध के रूप में सबाल्टर्न लोगों के इतिहास को देखना था जो इतिहास बनाने में उनके योगदानों की अनदेखी करता है। धनगारे (1988) ने कहा है कि सबाल्टर्न हिस्टोरियोग्राफी दृष्टिकोण लोगों की राजनीति की भूमिका को उजागर करके एक संतुलन बहाल करना चाहता है जो कि भारतीय इतिहास में निभाई गई कुलीन राजनीति के खिलाफ है।

गुहा के अनुसार, भारत में औपनिवेशिक काल के दौरान सब अलटर्न इतिहासलेखन किसानों और जनजातीय आंदोलनों पर केंद्रित है क्योंकि इसे प्रमुख मुख्यधारा के अभिजात्य इतिहासकार ने अनदेखा किया है। उनके लिए, लोगों की राजनीति की उपेक्षा - और राष्ट्रवादी आंदोलन में सबाल्टर्न वर्गों के योगदान से भारतीय इतिहास अधूरा है। इसके अलावा, उनके अनुसार, अभिजात्य इतिहासकार में भारतीय राष्ट्रवाद और स्वतंत्रता संग्राम का विश्लेषण करने की प्रवृत्ति है, जो स्वदेशी अभिजात वर्ग के एक आदर्शवादी उद्यम के रूप में है, जिसने लोगों को स्वतंत्रता से वंचित किया। इस तरह की इतिहासलेखन स्वतंत्रता संग्राम के दौरान व्यक्तिगत नेताओं या संगठनों और संस्थानों की प्रमुख ताकत के रूप में भूमिका पर जोर देती है। धनगारे (1988) का दावा है कि 'इस दृष्टिकोण के अनुयायियों का तर्क है कि अभिजात्य इतिहासलेखन, चाहे वह नव-उपनिवेशवादी हो या नव-राष्ट्रवादी किस्म का हो, ने हमेशा उस हिस्से को बढ़ा चढ़ा कर किया है जो भारतीय राष्ट्रवाद के निर्माण में निभाया गया अभिजात वर्ग है लेकिन लोगों (जनता) द्वारा उनके स्वतंत्र रूप से किए गए योगदानों की सही व्याख्याकम की है और उनके योगदान को स्वीकार करने में विफल रहा है।

गुहा (2013) ने अपने लेख को "औपनिवेशिक भारत के इतिहास के कुछ पहलू" शीर्षक दिया है, का तर्क है कि भारतीय राष्ट्रवाद के इतिहास में इन अभिजात्यवादियों का वर्चस्व था जो औपनिवेशिक और बुर्जुआ राष्ट्रवादी थे। इस प्रकार के ऐतिहासिक लेखन से यह आभास मिलता है कि भारतीय राष्ट्र और राष्ट्रवाद की चेतना केवल अभिजात वर्ग की उपलब्धि थी। इस संबंध में लोगों द्वारा किए गए योगदान की कोई प्रासंगिकता नहीं है। यद्यपि उन्होंने भारतीय राष्ट्रवाद के विकास और उसके निर्माण में स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान अपना योगदान दिया है। दूसरी ओर, इतिहास लेखन का अभिजात्य परिप्रेक्ष्य कानून और व्यवस्था की समस्या के रूप में उनकी अभिव्यक्ति और विद्रोह को चित्रित करता है। एकतरफा दृष्टिकोण भारतीय राष्ट्रवाद को कुछ विशिष्ट नेताओं के करिश्मे की प्रतिक्रिया के रूप में मानता है। इस प्रकार, सबाल्टर्न हिस्टोरियोग्राफी लोगों की राजनीति को नजरअंदाज करती है। सबाल्टर्न इतिहासकारों का तर्क है कि प्रभुत्वशाली कुलीनों की राजनीति के समानांतर राष्ट्रवादी आंदोलन में सबाल्टर्न वर्गों की भी अपनी राजनीति थी। उनकी राजनीति कुलीन राजनीति से उत्पन्न नहीं हुई थी और उनकी कुलीन राजनीति पर निर्भर नहीं थी। उनके लिए सबाल्टर्न एक स्वायत्त क्षेत्र है।

इस प्रकार, भारत में किसानों और जनजातीय आंदोलनों का अध्ययन करने में सबाल्टर्न दृष्टिकोण एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है क्योंकि यह लोगों की राजनीति और कुलीन वर्ग की राजनीति के विरोध में है। धनगारे (1988) ने 'लोगों' और 'कुलीन वर्ग' के बीच एक

दोतरफा विभाजन के लिए तर्क दिया है। दोनों को राष्ट्रवादी आंदोलन के दो डोमेन के रूप में देखा जाता है। वह संरचनात्मक द्वंद्ववाद या समाज की संरचना में विभाजन का निर्माण करता है। लोगों की राजनीति प्रमुख समूहों की राजनीति से नहीं हुई थी। वे स्वदेशी लोग, हाशिए पर रहने वाले समूह और श्रमिक आबादी के वर्ग और शहर और देश में मध्यवर्ती वर्ग हैं। वे ऐसे लोगों के विविध समूह हैं जो सामान्य या समान विचारधारा साझा नहीं करते हैं, लेकिन उनके बीच दिलचस्प सामान्य विशेषता अभिजात वर्ग के प्रतिरोध के प्रति एक धारणा थी। उनके बीच विभाजन और विविधता मैत्री की समस्या पैदा करती है जो उनके बीच संभव नहीं थी।

गुहा का तर्क है कि कई बार भारतीय राष्ट्रवाद के अभिजात्य इतिहासकारव्यक्तिगत वृत्तान्त प्रदान करते हुए दिखाई देते हैं, ने "देशी अभिजात वर्ग की अच्छाई जिनके कि औपनिवेशिक शासन के साथ विरोधी संबंध थे। यद्यपि, उनकी सहयोगवादी शोषक और उत्पीड़क के रूप में प्रवृत्ति थी, लोगों के हित को बढ़ावा देने में कोई दिलचस्पी नहीं थी। वे ब्रिटिश राज से सत्ता और विशेषाधिकार के लिए सबसे अधिक चिंतित थे (गुहा, 2013 :2)। गुहा के अनुसार, भारतीय राष्ट्रवाद का इतिहास भारतीय अभिजात वर्ग की आध्यात्मिक जीवनी है।

औपनिवेशिक सत्ता के खिलाफ औपनिवेशिक काल के दौरान किसानों, आदिवासियों और हाशिए पर पड़े समूहों का आंदोलन, विरोध, भिन्न तीव्रता को दर्शाता है। अभिजात वर्ग से स्वतंत्र उनकी लामबंदी और प्रतिरोध, स्वयं लोगों से उभरा। सबाल्टर्न हिस्टोरियोग्राफी, अभिजात वर्ग और लोगों के मध्य द्विआधार का निर्माण करती है। अभिजात वर्ग की राजनीति में लामबंदी ऊपर से हासिल की गई थी जबकि नीचे की राजनीति में उपनिवेशवाद में लामबंदी हासिल की गई थी। कबीले, जाति, रिश्तेदारी, प्रादेशिकता, पारिवारिक नेटवर्क, वंचना जैसे पारंपरिक संस्थानों द्वारा सब अलटर्न राजनीति और गतिशीलता को अधिक निर्देशित किया गया था। अभिजात वर्ग की राजनीति और गोलबंदी कानूनी और संवैधानिक विचारों से अधिक शासित थी। सबाल्टर्न लामबंदी अधिक हिंसक, आक्रामक और स्वतःस्फूर्त थी जबकि अभिजात वर्ग की एकजुटता सतर्क, नियंत्रित और उदारवादी थी।

इस प्रकार, सबाल्टर्न अध्ययन परियोजना एक वैकल्पिक इतिहास, 'लोगों का इतिहास' बनाने के लिए थी। गुहा औपनिवेशिक भारत में किसानों के विद्रोह के प्राथमिक पहलुओं (1983) में किसानों की बातें, किसानों की चेतना, उनके रहस्यवादी दर्शन और धार्मिकता और औपनिवेशिक विद्रोह के अपने अध्ययन में उनके समुदायों के सामाजिक बंधन के एक दिलचस्प वृत्तान्त की चर्चा करते हैं, इंडिया।

चूँकि वह एक मार्क्सवादी सबाल्टर्न इतिहासकार है, इसलिए वह अतीत की व्याख्या करते हैं ताकि इतिहासलेखन में आमूल-चूल परिवर्तन और चेतना विकसित हो सके। उनका मानना है कि किसान और आदिवासी विद्रोहियों को इतिहास की 'वस्तु' नहीं बल्कि उनके अपने इतिहास के 'निर्माता' माना जाना चाहिए। वे अपने स्वयं के परिवर्तनकारी चेतना से संपन्न हैं (धनगारे, 1988)।

बोध प्रश्न 2

नोट : क) अपने उत्तरों के लिए नीचे दी गई जगह का उपयोग करें।

ख) इकाई के अंत में दिए गए उत्तर के साथ अपने उत्तरों की जांच करें।

1) सबाल्टर्न हिस्टोरियोग्राफी (इतिहास लेखन) क्या देखती है?

.....

.....

2) सबल्टर्न परिप्रेक्ष्य में रणजीत गुहा के काम का मुख्य विषय क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

3) 'लोगों की राजनीति' पर धनागरे के विचार क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

4.2.2 डेविड हार्डमैन : देवी आंदोलन का अध्ययन

डेविड हार्डमैन, रणजीत गुहा की तरह भारत में भी सबाल्टर्न हिस्टोरियोग्राफी आंदोलन के प्रमुख सदस्यों में से एक हैं। उन्होंने औपनिवेशिक काल के दौरान मुख्य रूप से दक्षिण एशिया के इतिहास पर ध्यान केंद्रित किया। अपने कार्यों में, उन्होंने ग्रामीण समाज और उनके दावे पर औपनिवेशिक शासन के प्रभाव पर जोर दिया। भारतीय राष्ट्रवाद और स्वतंत्रता आंदोलन के उनके विश्लेषण ने स्थानीय शक्ति संरचना और राष्ट्रवाद को समझने में नई अंतर्दृष्टि दी है। उन्होंने विशेष रूप से पश्चिमी भारत में औपनिवेशिक समय के दौरान स्थानीय किसानों की गतिविधियों और आदिवासी (आदिवासी) के दावे की भूमिका की जांच की। उन्होंने भारत में सबाल्टर्न अध्ययन को बढ़ावा देने के लिए पश्चिमी भारत के आंदोलनों का विश्लेषण करने के लिए नृवंशविज्ञान और अभिलेखीय स्रोतों का उपयोग किया है। उन्होंने 1922-23 के दौरान गुजरात में हुए देवी आंदोलन का अध्ययन किया है। यह आदिवासी किसानों, साहूकारों, जमींदारों और शराब दुकान मालिकों के खिलाफ आदिवासी आंदोलन था ।

हार्डिमन ने अपने लेख में "आदिवासी एसरशन इन साउथ गुजरातः देवी आंदोलन" (सबाल्टर्न स्टडीज खंड 3) शीर्षक से आदिवासी समुदाय के लोगों पर शराब के हानिकारक प्रभावों के लिए शराब डीलरों के खिलाफ आदिवासियों के दावे के बारे में चर्चा की। 1878 के औपनिवेशिक अबकारी अधिनियम ने शराब के सभी स्थानीय निर्माण पर प्रतिबंध लगा दिया और जिले के मुख्यालय शहर में एक केंद्रीय आसवनी की अनुमति दी।

आदिवासी गाँवों में शराब बेचने के लाइसेंस के अलावा डिस्टलरी चलाने के लिए शराब के सौदागरों ने सरकार को बड़ी राशि का भुगतान किया। शराब के वितरण ने निम्न जाति के लोगों, विशेषकर आदिवासियों को बुरी तरह प्रभावित किया। हार्डिमन अपने लेख में इसका प्रतिकूल प्रभाव बताते हैं। शराब विक्रेताओं पर कुछ नियंत्रण के बावजूद, वे कारखाने निर्मितकर शराब की बिक्री और आदिवासियों के गाँवों के समूहों के बीच इसके वितरण पर एकाधिकार रखते रहे। आबकारी अधिकारियों को शराब के अवैध निर्माण और अवैध भट्टियों के वितरण के लिए रिश्वत दी जा रही थी (हार्डिमन 2013: 203-4)। धन उधार देकर लाभ

और शराब बेचने से होने वाला लाभ बहुत बड़ा था और उनके द्वारा भूमि में निवेश किया गया था। इससे आदिवासी समुदाय प्रभावित हुआ और शराब पीने का आदी हो गया। उनकी जमीनों को शराब की दुकान मालिकों के पास गिरवी रख दिया गया या उन्हें बेच दिया गया।

आदिवासी किसान धीरे-धीरे महसूस कर सकते थे कि कैसे उनके ही गाँव में शराब के धंधेबाज उनका शोषण कर रहे हैं, हालाँकि वे शराब जैसे प्रमुख उत्पीड़कों के कारण इस तरह के शोषण के खिलाफ मुखर और विरोध करने में विफल रहे ... लेकिन शोषण की भावना के लिए एकजुट होकर उनका (शराब व्यापारियों का) विरोध किया, आदिवासी सब अलटर्न समूहों के बीच अब प्रमुख शराब सामंतों द्वारा दमन नहीं किया जा सकता है।

1922 में गुजरात के पश्चिमी भाग में एक नई परंपरा के रूप में एक दिलचस्प घटना हुई, जिसे हार्डिमन 'देवी आंदोलन' कहते हैं। हार्डिमन ने पाया कि 1922 की शुरुआत में गुजरात के तटीय इलाकों में सबाल्टर्न मछुआरा समुदायों में चेचक की महामारी फैल गई थी। उनका मानना था कि चेचक एक देवी के कारण हुआ था और उन्हें महामारी से छुटकारा पाने के लिए देवी को संतुष्ट करने की आवश्यकता है। उन्होंने देवता (देवी द्वारा शमां) को संतुष्ट करने के लिए समारोहों का आयोजन शुरू किया। यह शमां (महिलाओं के पास होने) के माध्यम से है कि देवी ने यह जानकारी दी कि अगर वे मछली, मांसखाना और शराब पीना, ताड़ी छोड़ देते हैं तो वह संतुष्ट हो जाएंगी। लोगों ने उसकी सलाह पर अमल किया। देवी आंदोलन को सलाबाई के नाम से जाना जाने लगा। धीरे-धीरे आदिवासियों के गाँवों में मनुष्यों के माध्यम से शर्मिंदगी की प्रक्रिया फैल गई थी और उन्होंने भी शैमनवाद का अभ्यास करना शुरू कर दिया था। देवी के पास मौजूद महिलाओं को सुनने के लिए आदिवासी किसान एकत्र होते थे। नियमित रूप से स्नान करने के साथ-साथ शराब और मांस खाने और ताड़ी पीने से परहेज करने की देवी की मांग को पूरा करनाहोता था । इसका प्रभाव यह हुआ कि अधिकांश आदिवासियों ने पारसी शराब दुकान मालिकों और जमींदारों का सामाजिक बहिष्कार कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप आदिवासियों ने आपस में सामाजिक सुधार शुरू कर दिए। उनके कारण से शराब के कारोबारियों को नुकसान हुआ, हालाँकि शराबियों द्वारा आदिवासियों को शराब पीने की उनकी पुरानी आदतों को वापस लाने के प्रयास किए गए, लेकिन उन्होंने इनकार कर दिया और खुद को मना कर दिया और देवी के उनके विश्वास ने उन्हें शराब से बचने में मदद की। उपनिवेशवाद विरोधी मुख्यधारा के आंदोलन के दौरान, गांधीजी ने अपने आंदोलन और उनकी राजनीतिक आवाज़ की प्रवृत्ति के कारण आदिवासियों को अपने आंदोलन में शामिल किया, हरदिमान को मनाया। दक्षिण गुजरात में, आदिवासियों को औपनिवेशिक नीति का निष्क्रिय उद्देश्य माना जाता था। गुजरात के गांधीवादी राष्ट्रवादियों ने उन्हें राष्ट्रवादी आंदोलन में मध्य वर्ग के साथ गठबंधन में एक साथ लाया। स्थानीय कथाओं, स्मृतियों, गीतों के साथ-साथ अभिलेखीय सामग्रियों की मदद से, हार्डिमन ने न केवल साहूकारों, शराबियों और शराब विरोधी आंदोलन के खिलाफ अपने दावे में आदिवासियों की भूमिका की जांच कीबल्कि राष्ट्रवादी आंदोलन और सामाजिक सुधार में भी उनकी भूमिका की जांच की। बाहरी मदद से स्वतंत्र, उन्होंने धन उधारदाताओं और औपनिवेशिक संसाधन आधार की सामंती संरचना को तोड़ने की कोशिश की।

हार्डिमन ने गुजरात के खेड़ा जिले के स्थानीय क्षेत्रों में किसानों के बीच विस्तृत अध्ययन किया है। "उनके नृवंशविज्ञान विवरण से पता चलता है कि जिले के गांवों के गरीब और भूमिहीन आदिवासी किसानों की तुलना में मध्य वर्गीय किसान अपेक्षाकृत कट्टरपंथी हैं।"

बोध प्रश्न 3

नोट : क) अपने उत्तरों के लिए नीचे दी गई जगह का उपयोग करें।

ख) इकाई के अंत में दिए गए उत्तर के साथ अपने उत्तरों की जांच करें।

1) आदिवासियों के बारे में होर्डिमन ने देवी आंदोलन के अध्ययन के बारे में क्या बताया?

.....

.....

.....

.....

.....

4.2.3 उपाश्रित के रूप में दलित :बी. आर. अम्बेडकर

बी. आर. अम्बेडकर भारत के सबसे प्रमुख राजनीतिक विचारकों में से एक थे जिन्होंने भारत में जाति व्यवस्था और इसकी कठोरता को गंभीरता से देखा। उन्होंने दलितों और आदिवासी उपजातियों के मुद्दों को उठाया। उन्होंने निचली जाति के लोगों पर जाति व्यवस्था के प्रभाव का अध्ययन किया और उनके द्वारा सबसे अच्छा विश्लेषण किया गया। हालांकि भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के शुरुआती हिस्से के दौरान, इन मुद्दों पर ध्यान नहीं दिया गया था। एक नीची जाति के परिवार में पैदा होने के कारण, अंबेडकर ने अपना पूरा जीवन उस जाति व्यवस्था के खिलाफ लड़ने के लिए समर्पित कर दिया, जिसने दलित उपजातियों में भेदभाव आदि और उन्हें हाशिए पर डाल दिया गया। विदेश में शिक्षित होने के बाद, वह भारत वापस आ गए और कानून का अभ्यास करने लगे। 1920 में, उन्होंने दलित हितों को बढ़ावा देने के लिए बॉम्बे में 'बहिष्कृत हितकारिणी' सभा का गठन किया और सरकार के सामने रखकर उनकी समस्याओं का समाधान किया। वह न केवल जाति व्यवस्था के आलोचक थे बल्कि जातिगत भेदभाव के उन्मूलन के आंदोलन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। उन्होंने अन्य जातियों के साथ समान स्थिति और समान अवसरों का दावा करने के लिए दलितों की मदद की।

अम्बेडकर के प्रमुख लेखन हैं:

1) अछूत, वे कौन हैं?
2) शूद्र कौन थे?
3) राज्य और अल्पसंख्यक।
4) अछूतों की मुक्ति।
5) जाति काविध्वंश।

दलितों का उपाश्रित समूह भारतीय समाज में सबसे दबे-कुचले और भेदभाव वाले लोगों में से एक है। बी. आर. अम्बेडकर के अनुसार, उपाश्रित समुदाय वे हैं जिन पर प्रमुख जातियों द्वारा भेदभाव किया जाता है। सामान्य तौर पर, निचली जाति के लोगों को हिंदू समाज की वर्ण व्यवस्था के अनुसार दलित कहा जाता है, लेकिन आम राजनीतिक समझ और विमर्श में अनुसूचित जाति के लोगों को दलित के रूप में नामित किया जाता है। अनुसूचित जाति शब्द का प्रयोग पहली बार ब्रिटिश औपनिवेशिक सरकार ने भारत सरकार अधिनियम 1935

के माध्यम से किया था। गांधीजी ने उन्हें हरिजन कहा था, जिसका अर्थ है 'ईश्वर की संतान'। दलितों को कुछ समय के लिए बाहरी जातियों, बहिष्कृत, दबे-कुचले वर्ग, 'अनुसूचित जाति, हरिजन', पूर्व-अछूत आदि नामों से जाना जाता है।

अंबेडकर ने दलितों को "एक प्रकार की जीवन दशा" के रूप में परिभाषित किया, जो उच्च जातियों की ब्राह्मणवादी विचारधारा के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक वर्चस्व द्वारा दलित लोगों के शोषण, दमन और हाशिए पर खड़ा है। वे हिंदू समाज के वर्ण योजना की जाति की सीढ़ी में सबसे निचले तबके के हैं, जिन्हें ज्यादातर अछूत कहा जाता है। अंबेडकर जाति के विचार और उसके संबंधित गुणों जैसे पेशे और पदानुक्रम के प्रति आलोचनात्मक थे। उन्होंने जाति को एक प्राकृतिक विभाजन नहीं माना, बल्कि सामाजिक भेदभाव की श्रेणी में रखा। उनका मानना है कि भारतीय समाज में दलित सबसे अधिक पददलित (निचले तबके का) लोग हैं, जहां वे सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक रूप से पिछड़े हैं। उन्हें समाज के प्रदूषित तबके के रूप में माना जाता रहा है जहाँ उनका स्पर्श और यहाँ तक कि उनकी छाया भी सवर्णों को प्रदूषित कर सकती थी।

अंबेडकर द्वारा जाति व्यवस्था से संबंधित महत्वपूर्ण अवधारणाओं में से एक मत्वपूर्ण '**श्रेणीबद्ध असमानता**' का विचार था। वह असमानता और वर्गीकृत असमानता के बीच अंतर करते हैं। असमानता को त्वचा के रंग, नस्लीय और व्यावसायिक या काम के अंतर जैसे विभिन्न रूपों में देखा जा सकता है। पश्चिमी समाजों में काले और सफेद रंग के अंतर आम हैं। इन्हें नस्लीय अंतर के रूप में जाना जाता है। नस्लीय अंतर के कारण सामाजिक विभाजन पूर्वाग्रहों, विघटन, अपेक्षाकृत श्रेष्ठ माने जाने वाली नस्ल के खिलाफ किए जा रहे उत्पीड़न का आधार है। इसी तरह, औद्योगिक समाजों में, विभिन्न कार्य पदों के आधार पर मतभेद होते हैं। ये श्रमिक वर्ग (सर्वहारा) और प्रमुख वर्ग (बुर्जुआ) हैं। उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति और रुचियां एक-दूसरे से भिन्न हैं। वे असमान वर्ग के हैं और उनके बीच परस्पर विरोधी संबंध सदा के लिए है। औद्योगिक समाजों के प्रशासनिक और व्यावसायिक स्तरों पर भी सुपर-ऑर्डिनेट्स (प्रशासनिक और पेशेवर कुलीन वर्ग और नौकरशाह) और उप-ऑर्डिनेट्स (जो सुपर-ऑर्डिनेट्स के तहत काम करते हैं) हैं। वे असमान वर्ग भी हैं जहां उनके बीच असमानता उत्पादक कार्य की प्रकृति पर आधारित है जिसमें वे लगे हुए हैं। त्वचा के रंग, नस्ल और व्यावसायिक या काम के अंतर के आधार पर इस तरह की असमानताएं, असमानताओं के विभिन्न रूप हैं, लेकिन श्रेणिक असमानता, असमानता का एक अनूठा रूप है जो विशेष रूप से भारतीय समाज की विशेषता है, हिंदू सामाजिक व्यवस्था के संदर्भ में जहां जाति की निर्दिष्ट स्थिति अंतर और असमानता का आधार है। हिंदू जाति व्यवस्था चार वर्णों में एक श्रेणीबद्ध पदानुक्रमिक प्रणाली है, अर्थात ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। ३३ अछूत जाति व्यवस्था के बाहर हैं। वे जाति व्यवस्था में सबसे निचले दर्जे के लोग हैं। वे न केवल दूसरों से अलग हैं, बल्कि जन्म से भी असमान हैं और तदनुसार उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति निर्धारित की जाती है।

अंबेडकर के अनुसार, भारत में जाति व्यवस्था क्रमबद्ध असमानता का एक अनूठा रूप है जहां शूद्रों और अछूतों को छोड़कर, बाकी लोग पारंपरिक सामाजिक स्तर में अपनी श्रेणीबद्ध सामाजिक स्थिति के अनुसार विशेषाधिकारों का आनंद लेते हैं। अशिक्षित जाति पदानुक्रम के शीर्ष पर ब्राह्मणों को जाति विचारधारा का पूर्ण लाभ मिलता है। उनकी सामाजिक और कर्मकांड की स्थिति सर्वोच्च है, लेकिन शूद्र और अछूत जाति के पदानुक्रम में पूर्ण पीड़ित हैं। इस प्रकार, जाति व्यवस्था में लोगों को पदानुक्रमित आदेशों में विभाजित और व्यवस्थित किया जाता है। इसे अम्बेडकर ने ग्रेडेड असमानता कहा है। उसके लिए, असमानता एक सामाजिक स्थिति है जहां सामाजिक स्थिति दी गई है, पूर्वनिर्धारित है, और उस जाति में

जन्म से प्राप्त की जाती है और गैर-अछूत (उपलब्धि आधारित) परिवर्तनों को छोड़कर नहीं बदला जा सकता है। इस तरह की एक श्रेणीबद्ध प्रणाली, निर्दिष्ट स्थिति में बदलाव के लिए बहुत कम या गुंजाइश या विकल्प नहीं छोड़ती है। उनके पास जाति व्यवस्था की दमनकारी वास्तविकता से लड़ने का कोई विकल्प नहीं है, हालांकि परिवर्तन हो रहे हैं लेकिन जातिगत व्यवस्था को समाप्त नहीं किया जा सकता है, जब तक कि जाति व्यवस्था समाप्त नहीं हो जाती है और जातिविहीन समाजनहीं निर्मित होता है। सामाजिक असमानता के अन्य रूपों में, श्रमिक वर्ग के पास भेदभावपूर्ण प्रथाओं के लिए उद्योग के मालिक के खिलाफ लड़ने का विकल्प है, लेकिन यह संभव नहीं है, क्योंकि जाति की विचारधारा जाति के अनुसार, उच्च जाति के अधिकार और विशेषाधिकार हैं जाति पदानुक्रम में उनके नीचे निचली जातियों के ऊपर। (इस संबंध में पढ़ने के लिए, प्राचीन भारत में अंबेडकर द्वारा क्रांति और काउंटर क्रांति देखें)। इसी प्रकार, जाति श्रेणियों के अधिकारों को क्रमिक परिवर्तन को लगभग असंभव बना दिया जाता है।

अंबेडकर जाति व्यवस्था के कामकाज और सामाजिक बहिष्कार और दलितों विशेषकर निचली जाति के भेदभाव की प्रक्रिया के लिए काफी आलोचनात्मक हैं। गांधीजी के विचार और जाति से कोई लेना-देना नहीं रखने वाले धार्मिक संस्थानों के लिए भी वे बहुत आलोचनात्मक थे। वर्ण का कानून पैतृक व्यवसाय का पालन करके हमे रोटी कमाना सिखाता है और यह हमारे अधिकारों को नहीं बल्कि हमारे कर्तव्यों को परिभाषित करता है '(1990: 108)।

अंबेडकर का तर्क है कि जाति हित से अलग काम करती है। यह मैनुअल श्रम से बौद्धिकता को डिस्कनेक्ट करता है। यह महत्वपूर्ण हित साधने के अधिकार से इनकार करता है। यह लामबंदी को रोकता है। सभ्य समाज को श्रम विभाजन की आवश्यकता होती है, लेकिन किसी भी सभ्य समाज में श्रम का विभाजन श्रम के अप्राकृतिक विभाजन के साथ नहीं होता है। जाति एक पदानुक्रम है जिसमें श्रम का विभाजन एक के ऊपर एक किया जाता है। किसी अन्य देश में श्रम का विभाजन श्रम के उन्नयन के साथ नहीं होता है। इस प्रकार, ग्रेडेड असमानता भारत में जाति व्यवस्था की आत्मा है और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि सभी जातियों ने इस तरह के विभाजन को आत्मसात कर लिया है। ग्रेडेड असमानता के आत्मसातीकरण के परिणामस्वरूप सभी जातियों या आवश्यक सुधारों के लिए जाति व्यवस्था में जातियों के संयोजन को लाने में विफलता हुई है।

इसके अलावा, अंबेडकर के अनुसार, श्रेणीबद्ध असमानता न केवल सामाजिक रूप से बल्कि आर्थिक रूप से भी निचली जातियों को बाहर करती है। उदाहरण के लिए, महार जाति के दलितों को बुनाई विभाग में काम का अवसर नहीं मिलता है क्योंकि वे शुद्धता और प्रदूषण के कारक के कारण धागे को छूने वाले नहीं हैं। निचली जाति की उपजातियों द्वारा जाति विचारधारा का आंतरिककरण उन्हें उच्च जातियों या मालिकों के लिए आभारी बनाता है। यह उन्हें उनकी ताकत से अनभिज्ञ बनाता है जोउन्हें अमान्य बनाए रखता है। वे विनम्र हो जाते हैं और उनकी विनम्रता उनके अधीनता के प्रमुख मुद्दे में से एक है।

इस प्रकार, भारत में जाति-विरोधी आंदोलन में अंबेडकर केंद्रीय व्यक्ति बन गए। उन्होंने उच्च जातियों द्वारा दलितों पर अत्याचार के खिलाफ विरोध दर्ज कराने के लिए बहिष्कृत हितकारिणी सभा का गठन किया। सभा का मकसद शिक्षित, संगठित और आंदोलित करना था। उनका मानना है कि जब तक दलितों का उत्थान और संघर्ष नहीं होगा, वे अपने अधिकारों को प्राप्त नहीं करेंगे। स्व-जागरण जाति आधारित अस्पृश्यता जैसी सामाजिक बुराइयों को खत्म करने के सर्वोत्तम तरीकों में से एक है। उन्होंने जाति व्यवस्था की उत्पत्ति और भेदभाव की अपनी विचारधारा का पता लगाया और कहा कि मनुस्मृति और इस तरह

के अन्य लेखन की पवित्र हिंदू पांडुलिपियों ने जाति उत्पीड़न को वैध बनाया है। । ऐसे ग्रंथ सामाजिक भेदभाव के आधार को एक जन्म के आधार पर निर्धारित करते हैं। इसलिए, उन्होंने ऐसे ग्रंथों को नष्ट करने की वकालत की। 25 दिसंबर 1927 को मनुस्मृति जलाकर अम्बेडकर ने एक महान संघर्ष (महा-संघर्ष) की ओर कदम बढ़ाया और जातिगत पदानुक्रम और अस्पृश्यता के पौराणिक आधार को नकारने के लिए सत्याग्रह किया।

बोध प्रश्न 4

नोट : क) अपने उत्तरों के लिए नीचे दी गई जगह का उपयोग करें।

ख) इकाई के अंत में दिए गए उत्तर के साथ अपने उत्तरों की जांच करें।

1) बी. आर. अम्बेडकर के अनुसार उपाश्रित (सबाल्टर्न) समुदाय क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2) बी. आर. अंबेडकर ने दलितवाद को कैसे परिभाषित किया?

.....

.....

.....

.....

.....

3) श्रेणीबद्ध असमानता क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

4.3 सारांश

इस इकाई में हमने सबाल्टर्न की अवधारणा और रणजीत गुहा, डेविड हार्डिराम जैसे विद्वानों और बी. आर. अम्बेडकर के विचारों की व्याख्या की । आदिवासी और दलित सबाल्टर्न दृष्टिकोण की चर्चा हमें सबाल्टर्न के विचार का पता लगाने और सबाल्टर्न दृष्टिकोण से समाज पर चर्चा करने की गुंजाइश देती है। इतिहास का सबाल्टर्न लेखन बाह्य और आंतरिक से एक समालोचना है। 'निचले स्तर की आवाज' को छोड़ा नहीं जा सकता और

इसे नजरअंदाज भी नहीं किया जा सकता है। सबाल्टर्न हिस्टोरियोग्राफी और सबाल्टर्न स्टडीज के सिद्धांत और कार्यप्रणाली पर बहस इतिहासकारों और सामाजिक वैज्ञानिकों को किसानों और अन्य उपाश्रित वर्गों के दावों और राजनीति पर ध्यान देने की गुंजाइश देती है।

4.5 संदर्भ

धनगारे, डी. एन. 1988. " सबाल्टर्न कनसियसनेस एंड पोपुलिज़्मः टु अप्रोचेस इन द स्टडी ऑफ सोसल मोवमेंट्स इन इंडिया". सोसल साइंटिस्ट. वोल. 16, नं. 11 . 18-35

गांधी, एम. के. 1990,' ए विंडीकेशन ऑफ कास्ट', ऐनिहिलेशन ऑफ कास्टः अन अनडेलीवर्ड स्पीच, अर्नोल्ड पब्लिशर्स, न्यू डेलही.

गुहा, रणजीत. 1983. एलीमेंटरी आस्पेक्ट्स ऑफ पिजंट इनसरजेंसी इन कोलोनियल इंडिया. डेलहीः ओयूपी.

.....,रणजीत. 2013. " ऑन सम आस्पेक्ट्स ऑफ द हिस्टोरीयोग्राफी ऑफ कोलोनियल इंडिया" इन सबाल्टर्न स्टडीज़ राइटिंग ऑन साउथ एशियन हिस्टरी एंड सोसाइटी. वोल.1. न्यू डेलहीः ओयूपी

हरदिमन, डेविड. 2013. " आदिवासी असर्शन इन साउथ गुजरातः द देवी मोवमेंट" इन रणजीत गुहा (एड). सबाल्टर्न द्तडीज़ राइटिंग ऑन साउथ एशियन हिस्टरी एंड सोसाइटी. वोल. 1. न्यू डेलहीः ओयूपी

नायक, सी. डी. 2003. थाट्स एंड फ़िलॉसफ़ि ऑफ डॉ बी . आर . अंबेडकर. न्यू डेलहीः सरूप - संस

वसंत मून (एताल) डॉ. बाबा साहब अंबेडकर : रेटिंग एंड स्पीचेस. बॉम्बे, डिपार्टमेन्ट ऑफ एजुकेशन, गवर्नमेंट ऑफ महाराष्ट्र, वोल. 7: 1989. 211- 226

https://www.marxists.org/archive/gramsci/intro.htm_accessed on 28/08/2018

4.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) उपाश्रित (सबाल्टर्न) शब्द का अर्थ है अवर श्रेणी के लोगों की उनकी विभिन्न विशेषताओं जैसे कि आर्थिक स्थिति, नस्ल, जातीयता, लिंग, जाति, यौन अभिविन्यास। ये लोग समाज में ऐसी विशेषताओं के लिए हाशिए पर हैं। यह नीचले स्तर से समाज को समझने का एक तरीका है।

2) उपाश्रित (सबाल्टर्न) परिप्रेक्ष्य के प्रमुख विद्वानों में रणजीत गुहा, डेविड हार्डमैन, पार्थ चटर्जी, शाहिद अमीन, ज्ञानेंद्र पांडे, डेविड अर्नोल्ड, सुमित सरकार, दिपेश चक्रवर्ती, अंबेडकर और अन्य हैं।

बोध प्रश्न 2

1) सबाल्टर्न हिस्टोरियोग्राफी लोगों की राजनीति को नजरअंदाज करती है।

2) गुहा "औपनिवेशिक भारत में किसानों के विद्रोह के प्राथमिक पहलू" (1983) में 19वीं सदी के अपने अध्ययन में किसानों के दावों, किसानों की चेतना, उनके रहस्यवादी

दर्शन और धार्मिकता और उनके समुदायों के सामाजिक बंधन का एक दिलचस्प विवरण है, उनके द्वारा 19वीं शताब्दी में औपनिवेशिक भारत में किसान विद्रोह आदि।

3) धनागरे समाज की संरचना में विभाजन को मोटे तौर पर देखते हैं । लोगों की राजनीति प्रमुख समूहों की राजनीति से नहीं हुई थी। वे स्वदेशी लोग, हाशिए पर रहने वाले समूह और श्रमिक आबादी के वर्ग और शहर और देश में मध्यवर्ती वर्ग हैं। वे ऐसे लोगों के विविध समूह हैं जो सामान्य या समान विचारधारा साझा नहीं करते हैं, लेकिन उनके बीच दिलचस्प सामान्य विशेषता अभिजात वर्ग के प्रति प्रतिरोध की उनकी एक धारणा थी।

बोध प्रश्न 3

1) हार्डिमन ने स्थानीय आख्यानों, स्मृतियों, गीतों के साथ-साथ अभिलेखीय सामग्रियों के माध्यम से समझाया, आदिवासियों की भूमिका न केवल उनके उधारदाताओं, शराबियों और शराब विरोधी आंदोलन बल्कि राष्ट्रवादी आंदोलन और सामाजिक सुधार में भी है। किसी भी बाहरी मदद से स्वतंत्र, वे अर्थात् आदिवासियों ने धन उधारदाताओं और औपनिवेशिक संसाधन आधार की सामंती संरचना को तोड़ने की कोशिश की।

बोध प्रश्न 4

1) बी. आर. अम्बेडकर के अनुसार, सबाल्टर्न समुदाय वे हैं जिन पर प्रमुख जातियों, समुदायों द्वारा भेदभाव किया जाता है।

2) अंबेडकर ने दलितों को "एक प्रकार की जीवन दशा" के रूप में परिभाषित किया है, जो उच्च जातियों की ब्राह्मणवादी विचारधारा के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक वर्चस्व द्वारा दलित लोगों के शोषण, दमन और हाशिए की विशेषता है।

3) ग्रेडेड असमानता विभिन्न समूहों का पदानुक्रमित क्रम है जहां एक समूह को दूसरे से बेहतर माना जाता है। साथ ही श्रेष्ठ समूह को उसके ऊपर के समूहों के संबंध में हीन माना जाता है। अम्बेडकर ने भारत में जाति व्यवस्था को विस्तृत करने के लिए क्रमिक असमानता के विचार पर मंथन किया जहाँ शूद्रों को जाति पदानुक्रम में सबसे हीन समूह माना जाता है और ब्राह्मण सबसे श्रेष्ठ समूह हैं। वैश्य और क्षत्रिय बीच में हैं जहां वे शूद्र से श्रेष्ठ हैं लेकिन पारंपरिक रूप से ब्राह्मणों से नीच माने जाते हैं। सामाजिक और आर्थिक सहित जीवन के सभी क्षेत्रों में जन्म के आधार पर असमानता है।